हर दिन 800 महिलाओं की मौत...!

ऋचा वर्मा

हर वर्ष 11 जुलाई का दिन 'विश्व जनसंख्या दिवस' के रूप में मनाया जाता है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या दुनिया के अनेक देशों में विकराल रूप धारण करती जा रही है। भारत भी तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणामों को झेल रहा है। चीन के बाद सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों की पंक्ति में भारत दूसरी पायदान पर है। ऐसा नहीं है भारत सरकार और राज्यों की सरकारें इस दिशा में चिंतित नहीं हैं। बेहद चिंतित हैं। भारत सरकार के अलावा राज्य की सरकारों ने भी जनसंख्या नियंत्रण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम चला रखे हैं। भारत सरकार अपने स्तर पर और राज्यों की सरकारें अपने तई जनसंख्या नियंत्रण तथा लोगों को जागरूक करने के लिए कार्यक्रमों की श्रृंखलाएं संचालित कर रही हैं। मगर अपेक्षा के अनुसार और लक्ष्यों के अनुरूप - परिणाम न मिल पाने से चिंताएं बढ़ रही हैं।

विश्व जनसंख्या दिवस की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के संचालक परिषद् ने 1989 में की थी। उस समय विश्व की आबादी लगभग पांच अरब थी। इस दिवस को मनाने का विचार विश्व बैंक में कार्यरत डॉक्टर के.सी. जचारिया ने दिया था। संयुक्त राष्ट्र की 2017 की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की आबादी 7.6 अरब थी। रिपोर्ट में कहा गया, मौजूदा गति से जनसंख्या बढ़ती रही - तो 2030 तक विश्व की आबादी 8.6 अरब आंकड़े को छू जायेगी। प्रति वर्ष 83 मिलियन लोग जन्म ले रहे हैं। भारत और चीन की आबादी इस रिपोर्ट के अनुसार क्रमश: 125 और 132 करोड़ बतायी गई थी - जो विश्व जनसंख्या का 18% और 19% के आंकड़ा बनता है। तेज गति से बढ़ती जनसंख्या को लेकर चिंता जाहिर करने और इसके नियंत्रण के लिए समय-समय पर महत्वपूर्ण सुझाव देने वाले विशेषज्ञ मानते हैं, 'यदि विश्व की बढ़ती जनसंख्या को समय रहते नियंत्रित नहीं किया गया तो सभी संसाधन खत्म हो जायेंगे और युद्ध के हालात बन जायेंगे।'

कहा गया है, 'पहला सुख - निरोगी काया।' कह सकते हैं बढ़ती आबादी - इस उक्ति (पहला सुख - निरोगी काया) को अंगूठा दिखा रही है। मुंह चिढ़ा रही है। दरअसल अनियंत्रित पापुलेशन की कठिनाई से जूझ रहे अनेक देश नित-नई समस्याओं से घिरते जा रहे हैं। सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। संसाधन कम पड़ रहे हैं। संसाधनों की कमी और खराब स्वास्थ्य सेवाओं की वजह से

भारत के अलावा कई अविकसित देशों में मातृ और शिशु मृत्यु दर पर अंकुश नहीं लग पा रह है। कई देश हैं - जहां नियंत्रण या कमी आने की बजाय मातृ और शिशु मृत्यु दर में वृद्धि भी परिलक्षित हुई है। विश्व भर में हर दिन 800 महिलायें बच्चे को जन्म देते हुए मर रही हैं। गर्भवती महिलाओं की मौतों का यह आंकड़ा सभ्य समाज के लिए बेहद शर्मनाक माना जायेगा।

रोजगार, भ्रष्टाचार, कुपोषण और गरीबी बढ़ रही है। अभी देर नहीं हुई है। वक्त है। सभी को मिलकर जनसंख्या वृद्धिजनित समस्याओं का हल निकालना होगा। नहीं चेते तो हालात नियंत्रण के बाहर हो जायेंगे। कम और अधिक उम्र में विवाह को रोकना होगा। बेटे और बेटी की समानता को परिलक्षित और जागरूक करने वाले कार्यक्रमों को बढ़ाना होगा। कन्या भ्रूण हत्याओं पर और ज्यादा एवं प्रभावी अंकुश बेहद जरूरी है। बच्चों के जन्म में अंतर को लेकर लोगों को और ज्यादा जागरूक करने की आवश्यकता है। विशेषकर भारत के संदर्भ में ग्रामीण और अशिक्षित लोगों के बीच जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों की पहुंच बढ़ाना होगी। गर्भावस्था के दौरान महिला और गर्भस्थ शिशु के स्वस्थ रहने संबंधी क्या उपाय बेहद आवश्यक हैं? इसे लेकर जागरूकता जरूरी है। विकास की पांत में तेजी से आगे बढ़ते भारत में 100 प्रतिशत संस्थागत प्रसव के लक्ष्य की पूर्ति करना ही होगी।

भारत गंभीर है। प्रयास भी कर रहा है। विश्व जनसंख्या दिवस पर प्रयास कुछ ज्यादा होते दिखते हैं। पिछले विश्व जनसंख्या दिवसों पर आयोजित कार्यक्रमों पर नजर दौड़ाने पर ऐसे प्रमाण मिलते भी हैं। साल 2012 से 2018 के बीच विश्व जनसंख्या दिवसों को विशेष प्रकार से मनाया गया है। वर्ष 2012 में 'जननीय स्वास्थ्य सेवा के लिये विश्वव्यापी पहुँच' का संकल्प लिया गया था। इसके बाद के वर्षों में 'किशोरावस्था में गर्भावस्था पर ध्यान', 'जनसंख्या प्रचलन और संबंधित मुद्दे पर चिंता के लिये एक समय और युवा लोगों में निवेश करना', 'परिवार नियोजन: जन सशक्तिकरण और राष्ट्र विकास' और 'परिवार नियोजन हमारा मानवाधिकार है' जैसे उद्देश्यों को सामने रखकर आगे बढ़ा गया।

तमाम प्रयास तभी पूरी तरह से सार्थक होंगे जब इस दिवस पर रस्मादयगी बंद होगी। भारत ने परिवार नियोजन कार्यक्रम की शुरूआत 1950 में कर दी थी। आजादी के चार बरस बाद कार्यक्रम आरंभ हो गया था। करीब 69 साल बाद जनसंख्या कम होने की बजाय बढ़ते जाना अनेक सवाल खड़े करती है। हर मिनट में 25 बच्चों का जन्म भारत के परिवार नियोजन कार्यक्रम की असफलता की कहानी को बयां करता है। अब भी नहीं जागे तो जनसंख्या मामले में 2030 में चीन को हम पीछे छोड़ देंगे। सर्वाधिक जनसंख्या मामले में पहली पायदान पर खड़ा चीन काफी पहले जाग चुका है। उसने 1979 में 'एक बच्चा नीति' लागू करके विकराल रूप धारण करती जनसंख्या वृद्धि पर बहुत हद तक अंकुश लगा दिया है। बहुत

स्पष्ट है कि चीन से भारत समेत उन देशों को सबक सीखना चाहिये जो तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक गंभीर समस्याओं को झेलने के लिए मजबूर हैं।

(प्रस्तुतिः मनुज फीचर सर्विस)

नोटः आलेख के विचार लेखक के अपने हैं, इन विचारों की जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय नहीं लेता।

उक्त आलेख माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई मनुज फीचर सर्विस के अंतर्गत निशुल्क प्रकाशनार्थ है। कृपया आलेख के अंत में मनुज फीचर सर्विस प्रकाशित करने का अनुरोध है।